ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

कला और संस्कृति का संगम: सूरजकुंड शिल्प मेला

निशा किरण, शोधार्थी, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार (हरियाणा)
डा. बीना दीक्षित, विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, OSGU, हिसार (हरियाणा)
ईमेल आई डी: nishafina192@osgu.ac.in

सारांश:

भारत में कई सांस्कृतिक और धार्मिक मेलो का आयोजन किया जाता है , उनमे से एक है सूरजकुंड शिल्प मेला। मेले की शुरआत पहली बार १९८७ में हस्तशिल्प , हथकरघा और भारत की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि के लिए की गई थी। मेले ने हस्तशिल्प , हरकरघा उद्योग को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सूरजकुंड मेले में कई देशो के सांस्कृतिक रूप को नया आयाम दिया है। इस मेले में कपडा, चित्रकला, हाथीदांत का काम, मिटी के नक्काशी दर बर्तन, कलमकारी चित्रकला, बांस और बेंत की कला कृतियाँ , लोहे की कला कृतियाँ , चादर , हाथ से बनी हुए साड़िया तथा घास आदि से बने हुए उत्पाद शामिल है। और भी कला से जुड़े हुए उद्योग यहाँ हर साल अपनी कला का प्रदर्शन करते है। इस अध्ययन की उदेश्य सूरजकुंड शिल्प मेले में आने वाले लोगो की प्रेरणा का परीक्षण करना है , इस पेपर की डाटा संग्रह प्राथमिक और माध्यमिक स्त्रोतों से अपनाया गया है। इस वर्ष सूरजकुंड मेला फरवरी माह में आयोजित किया जा रहा है।

कीवर्ड: सूरजकुंड मेला, कला और संस्कृति, शिल्प, चित्रकला

अध्यन की क्रियाविधि

इस अध्ययन के लिए डाटा प्राथमिक और द्वितीय स्तर पर एकतित्र किया गया है , आंकड़े विभिन्न स्त्रोतों से लिए गए है जैसे लेख, अनुसन्धान पेपर, अख़बार, पुस्तक आदि। कई वर्षो से सूरजकुंड मेले में आने वाले लोगो के डाटा का भी अध्यन किया गया है। कितनी संख्या में लोगो ने सूरजकुंड मेले की यात्रा की और कितने देशो से लोग इस मेले में भाग लेने आये तथा २०२३ में मेले में क्या नयापन देखने को मिलेगा। अनुसंधान ने सांस्कृतिक पर्यटकों की जांच के लिए केस स्टडी के रूप में सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेले का उपयोग किया। लॉजिस्टिक प्रतिगमन का उपयोग मेले में आने वाले पर्यटकों की सामाजिक-जनसांख्यिकीय और यात्रा विशेषताओं के आधार पर मेले से संतुष्टि की संभावना का पता लगाने के लिए किया गया था।

परिचय

हरियाणा के सूरजकुंड में हर साल फरवरी के महीने मं सूरजकुंड मेले का आयोजन किया जाता है। सूरजकुंड या सूर्य की झील हरियाणा के फरीदाबाद जिले में है। यह 10 वीं शताब्दी का एक प्राचीन जलाशय है। यह एक कृत्रिम झील है जिसे अरावली पहाड़ियों की पृष्ठभूमि में एक एम्फीथिएटर के आकार के तटबंध के साथ बनाया गया है। सूरजकुंड का निर्माण तोमर वंश के सूरज पाल ने करवाया थामेले का आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा केंद्रीय पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति एवं विदेश मंत्रालय के सहयोग से किया जाता है।यह मेला देश की कला एवं संस्कृति का सबूत है। इस मेले में देश के कोने-कोने से कलाकार, शिल्पकार शामिल

होते हैं और अपनी कला का जौहर दिखाते हैं। देश ही नहीं अब विदेशी कलाकारों के लिये भी यह एक बड़ा मंच बन गया है।सूरजकुंड शिल्प मेले का आयोजन पहली बार वर्ष 1987 में भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि एवं विविधता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया था। यह एक अनूठा स्मारक है, क्योंकि इसका निर्माण सूर्य देवता की आराधना करने के लिए किया गया था और यह यूनानी रंगभूमि से मेल खाता है। यह मेला वास्तव में, इस शानदार स्मारक की पृष्ठभूमि में आयोजित भारत की सांस्कृतिक धरोहर की भव्यता और विविधता का जीता-जागता प्रमाण है। 2013 में मिला अंतर्राष्ट्रीय दर्जा केंद्रीय पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति, विदेश मंत्रालयों और हरियाणा सरकार के सहयोग से सूरजकुंड मेला प्राधिकरण तथा हरियाणा पर्यटन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित यह उत्सव सौंदर्यबोध की दृष्टि से सृजित परिवेश में भारत के शिल्प, संस्कृति एवं व्यंजनों को प्रदर्शित करने के लिहाज से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण स्थान एवं शोहरत रखता है। वर्ष 2015 में यूरोप, अफ्रीका, दक्षिण एशिया के 20 देशों ने इस मेले में भागीदारी की। इस वर्ष मेले में 23 देशों ने भाग लिया है, जिनमे चीन, जापान, श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, लोकतांत्रिक गणराज्य कांगो, मिश्र, थाईलैंड, मालदीव, रूस, किर्गिस्तान, वियतनाम, लेबनान, ट्यूनिशिया, तुर्कमेनिस्तान, मलेशिया और बांगलादेश की जोरदार उपस्थिति है। 2016 में 30वें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेले का भव्य आयोजन किया गया। इस मेले का आयोजन 40 एकड़ क्षेत्र में फैले मैदान में होता है। मेला पखवाड़े के दौरान शाम के समय प्रस्तुत किए जाने वाले रोमांचक सांस्कृतिक कार्यक्रम दर्शकों को पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

- यह मेला वर्ष 1987 में कुशल कारीगरों के पूल को बढ़ावा देने के लिये शुरू किया गया था, जो कि स्वदेशी तकनीक का इस्तेमाल करते थे, लेकिन ये लोग सस्ते मशीन-निर्मित उत्पादों के कारण पीड़ित थे।
- इस मेले को वर्ष 2013 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मेले रूप में अपग्रेड किया गया था।

सूरजकुंड मेला भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि एवं विविधता को प्रदर्शित करता है, इसके साथ ही यह विश्व का सबसे बड़ा शिल्प मेला है। इस क्षेत्र ने 2020 में 3900 हजार नौकरियां सृजित कीं जो भारत में कुल नौकरियों का लगभग 8.0 प्रतिशत थीं; और इसके 2028 तक लगभग 52 मिलियन नौकरियों तक बढ़ने की उम्मीद है.सांस्कृतिक पर्यटन एक समाज को अपनी संस्कृति और विरासत को बचाने में मदद करता है, छवि बनाता है और पहचान को मजबूत करता है। मेले और त्यौहार सांस्कृतिक पर्यटन का अभिन्न अंग हैं। भारत में लोग इन आयोजनों को पूरे उत्साह, रंग, हर्षोल्लास और रीति-रिवाजों के साथ मनाते हैं

उद्देश्य

- इसका मुख्य उद्देश्य लोकल आर्ट को बढ़ावा देना और रोजगार के अवसर प्रदान करना था। इस मेले में कपड़ा, चीनी मिट्टी के बर्तन और टेराकोटा आदि मिलता है।
- भारत की शिल्पकला को विदेशो तक पहुंचना

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

- मेले में मोहक संस्कृति, प्राचीन शिल्पों और परपराओं तथा विरासत की झलक मिलती है, जो अपनी क्षमता से इतिहास बन गई है।
- एक ऐसा वातावरण तैयार करना जिसमे ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपनी कलाकारी का प्रदर्शन कर सके

विश्लेषण और व्याख्या

इस मेले में हर वर्ष किसी एक राज्य को थीम बना कर उसकी कला, संस्कृति, सामाजिक परिवेश और परंपराओं को प्रदर्शित किया जाता है। वर्ष 2020 में राजस्थान थीम राज्य है। इसे दूसरी बार यह गौरव प्राप्त हुआ है। मेले में लगे स्टॉल हर क्षेत्र की कला से परिचित कराते हैं। सार्क देशों एवं थाईलैंड, तजाकिस्तान और मिस्र के कलाशिल्पी भी यहां आते हैं।

पश्चिम बंगाल और असम के बांस और बेंत की वस्तुएं, पूर्वोत्तर राज्यों के वस्त्र, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश से लोहे व अन्य धातु की वस्तुएं, उड़ीसा एवं तमिलनाडु के अनोखे हस्तशिल्प, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब और कश्मीर के आकर्षक परिधान और शिल्प, सिक्किम की थंका चित्रकला, मुरादाबाद के पीतल के बर्तन और शो पीस, दक्षिण भारत के रोजवुड और चंदन की लकड़ी के हस्तशिल्प भी यहां प्रदर्शित हैं।

यहां अनेक राज्यों के खास व्यंजनों के साथ ही विदेशी खानपान का स्वाद भी मिलता है। मेला परिसर में चौपाल और नाट्यशाला नामक खुले मंच पर सारे दिन विभिन्न राज्यों के लोक कलाकार अपनी अनूठी प्रस्तुतियों से समा बांधते हैं। शाम के समय विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। दर्शक भगोरिया डांस, बीन डांस, बिहू, भांगड़ा, चरकुला डांस, कालबेलिया नृत्य, पंथी नृत्य, संबलपुरी नृत्य और सिद्घी गोमा नृत्य आदि का आनंद लेते हैं। विदेशों की सांस्कृतिक मंडलियां भी प्रस्तुति देती हैं।इनके अलावा यहां सार्क देशों के हस्तशिल्प, विदेशी खाद्य हैं।

सूरजकुंड मेले का इतिहास

वर्ष	सहयोगी राज्य और देश
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1987& 1988	कोई भी सहयोगी राज्य नहीं
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1989 & 2010	**सहयोगी राज्य** :- राजस्थान
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1990 & 2008	**सहयोगी राज्य** :- पश्चिम बंगाल
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1991	**सहयोगी राज्य** :- केरल
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1992 & 2005, 2015	**सहयोगी राज्य** :- छत्तीसगढ़

	सहभागी देश :- लेबनान
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1993	**सहयोगी राज्य** :- ओडिशा
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1994& 2013	**सहयोगी राज्य** :- कर्नाटक **सहभागी देश** :- ग्रुप ऑफ़ अफ्रीकन नेशन
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1995	**सहयोगी राज्य** :- पंजाब
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1996& 2020	**सहयोगी राज्य** :- हिमाचल प्रदेश **सहभागी देश** :- उज़्बेकिस्तान
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1997	**सहयोगी राज्य** :- गुजरात
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1998	**सहयोगी राज्य** :- नार्थ ईस्टर्न स्टेट्स (सात बहने)
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 1999 & 2007, 2011	**सहयोगी राज्य** :- आंध्र प्रदेश
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2000	**सहयोगी राज्य** :- जम्मू एंड कश्मीर
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2001 & 2014	**सहयोगी राज्य** :- गोवा **सहभागी देश** :- श्री लंका
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2002	**सहयोगी राज्य** :- सिक्किम
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2003	**सहयोगी राज्य** :- उत्तराँचल
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2004	**सहयोगी राज्य** :- तमिलनाडु
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2006	**सहयोगी राज्य** :- महाराष्ट्र
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2009	**सहयोगी राज्य** :- मध्य प्रदेश
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2012	**सहयोगी राज्य** :- असम **सहभागी देश** :- थाईलैंड
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2016	**सहयोगी राज्य** :- तेलंगाना **सहभागी देश** :- चीन और जापान
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2017	**सहयोगी राज्य** :- झारखण्ड
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2018	**सहयोगी राज्य** :- उत्तरप्रदेश **सहभागी देश** :- किर्गिस्तान
सूरजकुंड क्राफ्ट मेला 2019	**सहयोगी राज्य** :- महाराष्ट्र **सहभागी देश** :- थाईलैंड

2020 के सूरजकुंड मेले आ आयोजन 1फरवरी को देश के राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद दवारा किया गया था मेले में पिछली बार पार्टनर कंट्री के तौर पर उज्बेकिस्तान ने शिरकत की , जबकि थीम स्टेट हिमाचल प्रदेश बना था।

लगभग 2540 शिल्पकार, 300 कलाकारों और 30 देशो के अतिथियों ने हिस्सा लिया। पूरे सूरजकुंड मेले को देखने के लिए लगभग 13 लाख दर्शको ने हिस्सा लिया

महामारी कोविड-19 के कारण दो साल के अंतराल के बाद फिर से शुरू हुए मेले का आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति और विदेश मामलों के केंद्रीय मंत्रालयों के सहयोग से किया जाता है।जम्मू और कश्मीर 35वें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला 2022 का 'थीम स्टेट' है, इसलिए वैष्णो देवी मंदिर, अमरनाथ गुफा, कश्मीर से वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करने वाला अपना घर, हाउस बोट का लाइव प्रदर्शन और मेमोरियल गेट 'मुबारक मंडी-जम्मू' की प्रतिकृतियां मुख्य आकर्षण हैं।

निष्कर्ष

सुरजकुण्ड मेला सैंकड़ों शिल्पियों के लिये रोजी-रोटी कमाने का एक अच्छा स्थान बन गया है जहां वे अपनी कला और शिल्प के राष्ट्रीय मंच के प्रदर्शन से अन्य रास्ते भी खुलते हैं। इसलिये वे अपनी कलाओं और शिल्पों के बेहतरीन नमूने लाते हैं और उन्हें मेले में प्रदर्शित करते हैं। मेले से नियार्तकों और खरीददारों को वार्षिक मिलन का भी अवसर मिलता है। यहां किसी विचैलिये के बिना शिल्पकार और निर्यातक आमने-सामने होते हैं। इससे शिल्पकारों को अपनी कला क्षेत्र का विस्तार करने और उसमें सुधार करने का सीधा मौका मिलता है सूरजकुंड अंतरास्ट्रीय शिल्प मेला देश ही नहीं बल्कि दुनिआ के कलाकारों को अपनी और आकर्षित करता है। हर साल मनाया जाने वाला ये उत्सव कला पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए सुनहरा मौका लेकर आता है , यह मेला कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का भरपूर मौका देता है। अध्ययन में कुछ सामाजिक-जनसांख्यिकीय चर शामिल हैं जिन्हें इसकी सबसे बड़ी सीमा कहा जा सकता है। अधिक चर जैसे आय, पर्यटकों के प्रकार और संतुष्टि के स्तर को और अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार के पर्यटकों की संतुष्टि के अंतर्निहित आयामों की जांच के लिए दो या दो से अधिक मेलों के बीच तुलनात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूचि

- डा . पियूष शर्मा और डा . महेश, Vol. 02, issue 02, July-Dec 2017
- चित्रांगद कुमार, PSA Journal(Vol. 83, Issue 5)
- कल्चरल टूरिज्म : ए स्टडी ऑफ़ सूरजकुंड इंटरनेशनल क्राफ्ट्स फेयर , तुर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ क्वालिटेटिव इन्क्वायरी (Volume 12, Issue 9, August 2021: 186-194
- डैन , जेएम (१९७७) अहंकार - वृद्धि और पर्यटन , पेज संख्या १८४-१९४
- परवीन रंगा , विजिटर 'स मोटिवेशन : ए स्टडी ऑफ सूरजकुंड क्राफ्ट फेयर ऑफ़ हरयाणा, Published On: May, 2018, Volume: 15 / Issue: 3

- कित्तेर्लिन ऍम एंड यु , ऍम (२०१४) फेस्टिवल मोटिवेशन एंड लॉयल्टी फैक्टर - ेंकटरोस इंटिफ़िक्स टूरिज्म एंड मैनेजमेंट स्टडीज १० (१), ११९-126
- सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला, (2021)। (ऑनलाइन) https://haryanatourism.gov.in/vision से लिया गया
- मेलों और त्योहारों (2021), (ऑनलाइन) से लिया गया: http://india.gov.in/topics/artculture/fairs-festivals
- मालिक अस एंड मनीषा (२०१८),सूरजकुंड शिल्प मेले में आगंतुकों के अनुभवों का अध्ययन। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च एंड एनालिसिस, 5(2), 207-212
- रिचर्ड्स, जी. (2020) का पूर्व-प्रकाशन संस्करण विरासत और पर्यटन: स्थानीय लोगों और आगंतुकों के लिए एक साझा चिंता? सुवार, के. और रिप, एम. (एड्स) वर्ल्ड हेरिटेज मैनेजमेंट, अर्बन प्लानिंग एंड सस्टेनेबल टूरिज्म में। वियना: स्टडीएनवर्लग
- गूगल डॉट कॉम
- मैगज़ीन, अख़बार
- इंडियन टूरिज्म डॉट कॉम
- हरियाणा पर्यटन.gov.in
- टाइम्स नाउ न्यूज डॉट कॉम